Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

रामायण का काल निर्धारण → आदिकाव्य का प्रणयन कब हुआ? यह प्रश्न

आधुनिक आलोचकों/समालोचकों के लिए यक्ष प्रश्न बना हुआ है। इसमें पाश्चात्य और भारतीय दोनों प्रकार के विद्वान सम्मिलित हैं। इन विद्वानों ने रामायण के काल निर्णय का जितना भी प्रयास किया वह इस ~~इन~~ मामले में निरर्थक ही प्रमाणित हुई है क्योंकि हम इस आधार पर किसी सर्वसम्मत निर्णय पर नहीं पहुँच सकते हैं। फिर भी इन प्रयासों के विषय में जानना आवश्यक है।

विद्वानों ने रामायण के काल निर्धारण का प्रयास अन्तः साक्ष्यों और बाह्य साक्ष्यों के आधार पर किया है। इनका उल्लेख आगे किया जा रहा है→

अन्तः साक्ष्य→

(क) वेदों के पश्चात् → आदिकाव्य में आर्षकवि ने अनेक स्थलों पर ~~[illegible]~~ इसे वेदसम्मत

Scanned with CamScanner

माना है। बालकाण्ड के प्रथम सर्ग में ही इसका उल्लेख प्राप्त होता है —

> "इदं पवित्रं पापघ्नं पुण्यं वेदैश्च सम्मितम्।
> यः पठेत् रामचरितं सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥"
> (1/1/98)

अर्थात् वेदों के समान पवित्र एवं पापनाशक तथा पुण्यमय इस रामचरित को जो पढ़ेगा, वह सभी पापों से मुक्त हो जायेगा।

रामायण के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि श्रीराम चारों भाइयों के साथ महर्षि वशिष्ठ के आश्रम में ~~[illegible]~~ जाकर वेदाध्ययन करते थे। राजर्षि जनक के गुरु पुरोहित याज्ञवल्क्य, गौतम, शतानन्द आदि सभी वेदों में निष्णात थे। यही नहीं, स्वयं रावण भी वेदों का बड़ा भारी विद्वान् पण्डित था। उसके यहाँ अनेक वेदपाठी ब्राह्मण थे। हनुमानजी जब अशोकवाटिका में सीताजी को ढूँढ़ते हुए पहुँचे और अशोकवृक्ष पर छिपकर बैठे, तब आधी रात के बाद उन्हें लंकानिवासी वेदपाठी विद्वानों की वेदध्वनि सुनाई पड़ी—

> "षडङ्गवेदविदुषां क्रतुप्रवरयाजिनाम्।
> शुश्राव ब्रह्मघोषान् स विरात्रे ब्रह्मरक्षसाम् ॥"
> (5/18/2)

हनुमान जी भी वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् थे। उनके विषय में श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा है कि जिसे ऋग्वेद की शिक्षा नहीं मिली, जिसने यजुर्वेद का अभ्यास नहीं किया तथा जो सामवेद का विद्वान नहीं है, वह इतनी सुन्दर भाषा में वार्तालाप नहीं कर सकता—

> "नानृग्वेदविनीतस्य नायजुर्वेदधारिणः।
> नासामवेदविदुषः शक्यमेव विभाषितुम् ॥"
> (4/3/28)

Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

Scanned with CamScanner

(ख) वाल्मीकि एवं श्रीराम समकालीन → रामायण की कथा जिस प्रकार गुम्फित है, उससे यह मानने में संदेह का अवसर नहीं रह जाता है कि आदिकाव्य के रचयिता और उसके नायक समकालीन थे।

(ग) पाटलिपुत्र नगर की स्थापना के पूर्व → रामायण (बालकाण्ड / सर्ग 31) में उल्लेख है कि राम गंगा और सोन के संगम के पास से जाते हैं, परन्तु दोनों के संगम पर स्थित वर्तमान पाटलिपुत्र का उल्लेख नहीं है। यह प्रमाणित तथ्य है कि मगधनरेश अजातशत्रु ने 500 ई०पू० के लगभग इस नगर को बसाया था। इससे स्पष्ट होता है कि पाटलिपुत्र की स्थापना से पूर्व रामायण की रचना हो चुकी थी।

(घ) अयोध्या का नाम परिवर्तित होने से पूर्व → राम के काल में कौशल जनपद की राजधानी अयोध्या बताई गई है। बाद में बौद्धों ने, जैनों ने, यूनानियों ने, यहाँ तक की पतञ्जलि ने भी अयोध्या नगरी को साकेत के नाम से दिया है। लव की राजधानी, जैसा कि उत्तरकाण्ड में दी गई है, श्रावस्ती के उस स्थान पर स्थापित की गई थी जहाँ बुद्ध के समय कौसलराज प्रसेनजित राज्य करता था। इससे हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि रामायण की रचना उस समय हुई थी जिस समय अयोध्या नगरी विद्यमान थी, इसका नाम साकेत नहीं पड़ा था और श्रावस्ती नगरी प्रसिद्ध नहीं हो पाई थी।

(ङ) बुद्ध से पूर्व → बुद्ध के समय जिस वैशाली राज्य का पर्याप्त उल्लेख मिलता है, वह रामायण में विशाला और मिथिला- इन दो राज्यों में विभाजित था। विशाला का तत्कालीन राजा सुमति था। उसका यह नामकरण राजा इक्ष्वाकु एवं रानी अलम्बुसा से उत्पन्न पुत्र विशाल द्वारा बसाए जाने के कारण हुआ। इसी प्रकार मिथिला में

उस समय जनकवंशीय राजा सीरध्वज जनक राज्य करता था। इससे निश्चित है कि रामायण की रचना तथागत बुद्ध से पूर्व हो चुकी थी।

इसी क्रम में इस बात का उल्लेख करना आवश्यक है कि बालकाण्ड की सूचना के अनुसार उत्तरी भारत कौशल, अंग, कान्यकुब्ज, मगध, मिथिला आदि अनेक छोटे-छोटे राज्यों में बंटा था। यह स्थिति बुद्ध के पूर्व के समय को रेखांकित करती है।

(च) रामायण के अन्तःसाक्ष्य उस युग की स्थिति के परिचायक हैं, जबकि दक्षिण के विराट् अरण्यभाग में आर्य-अनार्य नहीं बसे थे। यह स्थिति 500 ई०पू० से बहुत पहले की है।

(छ) रामायण में बौद्ध धर्म का प्रभाव सर्वथा अदृश्य है। एक स्थान पर बुद्ध का नाम आया है और उन्हें चोर एवं नास्तिक कहा गया है — "यथा हि चौरः स तथा हि बुद्धस्तथागतं नास्तिकमत्र विद्धि।" प्रायः सभी विद्वान् इसे प्रक्षिप्त मानते हैं। यह श्लोक बुद्ध और बौद्ध-धर्म की निन्दा के लिए बाद में जोड़ा गया है। विन्टरनित्स भी रामायण में बौद्ध धर्म के प्रभाव का सर्वथा अभाव मानते हैं —

"Whether traces of Buddhism can be proved in the Ramayana. It can probably be answered with an absolute negative."

बाह्य साक्ष्य →

(क) अश्वघोष से पूर्व → अश्वघोष, जिनका समय 78 ई० का है, ने 'बुद्धचरितम्' नामक महाकाव्य में सुन्दरकाण्ड की अनेक रमणीय उपमाओं और उत्प्रेक्षाओं को निबद्ध किया है। इससे स्पष्ट होता है अश्वघोष के अस्तित्व में आने से पूर्व रामायण की रचना हो चुकी थी।

Scanned with CamScanner

(ख) <u>बौद्ध कवि कुमारलात एवं जैनकवि विमलसूरि से पूर्व</u>→ बौद्ध कवि कुमारलात (100 ई०) की 'कल्पना - ~~[illegible]~~ मण्डतिका' में रामायण की कथा के परायण का उल्लेख है। जैनकवि विमलसूरि (68 ई०) ने रामायण की राम कथा को आधार बनाकर प्राकृत में किया। स्पष्ट है इन लोगों से पूर्व रामायण की रचना हो चुकी होगी।

(ग) <u>कालिदास से पूर्व</u>→ कालिदास का समय क्या है- इस सम्बन्ध में भी विद्वानों में मतभेद है। फिर भी अधिसंख्य समालोचकों ने इनका समय ई०पू० प्रथम शताब्दी स्वीकार किया है। इन्होंने अपने कई काव्यों में ~~[illegible]~~ आदिकाव्य और आदिकवि का नाम बड़े आदर से लिया है। इसके अतिरिक्त उन्होंने अपने महाकाव्य 'रघुवंश' की रचना रामायण के आधार पर की। स्पष्ट है ई०पू० प्रथम शती से पूर्व रामायण की रचना हो चुकी थी।

(घ) <u>भास के पूर्व</u>→ भास ने रामायण को आधार बनाकर पाँच नाटकों का प्रणयन किया। यह इस बात को प्रमाणित करता है कि भास के समय रामायण उपजीव्य काव्य के रूप में प्रतिष्ठित हो चुका था। विद्वानों ने भास का समय 450 ई०पू० से 370 ई०पू० के बीच में स्वीकार किया है। अतः रामायण की रचना इसके पूर्व हो चुकी होगी।

(ङ) <u>कौटिल्य के पूर्व</u>→ कौटिल्य (ई०पू० पाँचवीं शताब्दी) ने अपने ग्रन्थों में रामायण के श्लोकों को उद्धृत किया है जो रामायण को ई०पू० पाँचवी शताब्दी से पूर्व की रचना प्रमाणित करता है।

(च) <u>पाणिनि से पूर्व</u>→ वैयाकरण पाणिनि ने सूत्रों और गण-पाठों में ~~सूर्पणखा~~ शूर्पणखा, रावण, विभीषण, विश्वामित्र, कैकेयी इत्यादि पदों की सिद्धि की है। यह इस बात की ओर संकेत करता है कि रामायण अष्टाध्यायी के लिखे जाने से पूर्व लोकप्रिय स्थान पर अधिष्ठित था। विद्वानों ने पाणिनि का समय ~~500 ई०पू०~~ 2400 ई०पू० से 500 ई०पू० के बीच निर्धारित किया है।

Scanned with CamScanner

(घ) वेदव्यास से पूर्व → महर्षि कृष्णद्वैपायन वेदव्यास ने महाभारत और अष्टादश पुराणों की रचना की। इन ग्रन्थों में अनेक ऐसे स्थल हैं जिनसे प्रमाणित होता है कि रामायण, महाभारत से पूर्व की रचना है।

रामायण में महाभारत की घटनाओं तथा पात्रों का उल्लेख तक नहीं है, परन्तु महाभारत रामायण की कथा तथा पात्रों से पूरी तरह परिचित है। वनपर्व के तीर्थ-यात्रा प्रसङ्ग में शृङ्गवेरपुर (85/65) तथा गोप्रतार (85/70) तीर्थ में गिने गए हैं, क्योंकि पहले स्थान पर राम ने गंगा पार किया और दूसरे पर वे अपनी प्रजाओं के साथ भूलोक से स्वर्ग में चले गए।

वनपर्व में ही अठारह अध्यायों में (274–291) रामोपाख्यान है, जिसमें रामचन्द्र की कथा संक्षेप में वर्णित है। इस उपाख्यान में वाल्मीकीय रामायण के श्लोक भी ज्यों के त्यों रखे गये हैं। उपमाएं एवं कल्पनाएं भी वाल्मीकि से ली गई हैं।

रामायण के श्लोकों की समता केवल रामोपाख्यान में ही उपलब्ध नहीं होती, प्रत्युत महाभारत के अन्य पर्वों में भी यह समता तथा निर्देश नितान्त सुस्पष्ट हैं। उदाहरणार्थ माया सीता को मारते समय इन्द्रजीत ने हनुमानजी से जो वचन कहे थे, वे ही वचन द्रोणपर्व में वाल्मीकि के उल्लेखपूर्वक अक्षरशः प्राप्त होते हैं।

"न हन्तव्याः स्त्रियः इति यद् ब्रवीषि प्लवँगम।
पीडाकरममित्राणां यत्तु कर्त्तव्यमेव तत् ॥"
(6/81/28)

महाभारत में इसका उल्लेख इस रूप में प्राप्त होता है—

"अपि चायं पुरा गीतः श्लोको वाल्मीकिना भुवि।
न हन्तव्याः स्त्रिय इति यद् ब्रवीषि प्लवंगम॥
सर्वकालं मनुष्येण व्यवसायवता सदा।
पीडाकरममित्राणां यत् स्यात् कर्तव्यमेव तत्॥"
(143/67-68)

Scanned with CamScanner

महाभारत के वन पर्व में लिखा है कि च्यवन तप करते हुए वाल्मीकि हो गए -

"स वाल्मीकिरभवदृषिः" (122/3)

शान्तिपर्व में वाल्मीकि का स्मरण भार्गव नाम से किया गया है -

"श्लोकश्चायं पुरा गीतो भार्गवेण महात्मना"
(56/40)

वनपर्व में रामायण का नामतः उल्लेख है -

"रामायणेऽतिविख्यातः श्रीमान् वानरपुङ्गवः।"
(149/11)

दैवीय गुणों से सम्पन्न होने के बाद भी श्रीराम वाल्मीकि रामायण में मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में ही प्रतिष्ठित हैं, परन्तु महाभारत में उन्हें विष्णु का अवतार स्वीकार कर लिया गया है। राम का समय महाभारत के अनुसार त्रेता और द्वापर की संधि में होता है। "संध्यंशे समनुप्राप्ते त्रेतायां द्वापरस्य च" (शान्ति पर्व 339/85)।

त्रेता और द्वापर की सन्धि में रामायण की रचना स्वीकार करने पर उसका समय आज से 8,80,109 वर्ष पूर्व पड़ता है।

हरिवंशपुराण जिसे महाभारत का परिशिष्ट माना जाता है, में दाशरथि पुत्र राम का उल्लेख प्राप्त होता है -

"चतुर्विंशयुगे चापि विश्वामित्रपुरःसरः।
रामो दशरथस्याथ पुत्रः पद्मायतेक्षणः॥"
(4/41)

पुराणों में भी रामकथा और उसके माहात्म्य का वर्णन प्राप्त होता है।

स्कन्दपुराण में रामायण का माहात्म्य इन शब्दों में वर्णित है —

Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

Scanned with CamScanner

"रामायणं नाम परं तु काव्यं सुपुण्यदं वै शृणुत द्विजेन्द्राः।
यस्मिञ्छ्रुते जन्मजरादिनाशो भवत्यदोषः स नरोऽच्युतः स्यात्॥
वरं वरेण्यं वरदं तु काव्यं संतारयत्याशु स सर्वलोकम्।
संकल्पितार्थप्रदमादिकाव्यं श्रुत्वा च रामस्य पदं प्रयाति॥"

अर्थात्

रामायण नामक काव्य सर्वश्रेष्ठ है, यह उत्तम पुण्य का फल देने वाला है। द्विजेन्द्रों! आपलोग इसका श्रवण करें। इसे सुनने से जन्म और जरा आदि अवस्थाओं का नाश होता है तथा श्रवण करने वाला पुरुष नर से नारायण बन जाता है। आदिकाव्य रामायण श्रेष्ठ होने के साथ ही वरदाता भी है, यह अपने आश्रय में आये हुए सम्पूर्ण जगत् का तत्काल उद्धार कर देता है।

श्रीमद्भागवत महापुराण में प्रथम स्कन्ध में ही रामावतार का उल्लेख प्राप्त होता है। इसमें कहा गया है कि श्रीराम ने सेतुबन्धन, रावण वध आदि वीरतापूर्ण बहुत-सी लीलाएं कीं —

"नरदेवत्वमापन्नः सुरकार्यचिकीर्षया।
समुद्रनिग्रहादीनि चक्रे वीर्याण्यतः परम्॥
(1/3/22)

~~[struck]~~ महर्षि वेदव्यास के शब्दों में 'मैं भी उन्हीं रघुवंश-शिरोमणि भगवान् श्रीरामचन्द्रजी की शरण ग्रहण करता हूँ, जिनका निर्मल यश समस्त पापों का विनाश कर देने वाला है। वह इतना व्यापक है कि दिग्गजों का श्यामल शरीर भी उनकी उज्ज्वलता से चमक उठता है। आज भी बड़े-बड़े ऋषि-महर्षि राजाओं की सभा में उनका गान करते रहते हैं। स्वर्ग के देवता और पृथिवी के नरपति अपने कमनीय किरीटों से उनके चरणकमलों की सेवा करते रहते हैं' —

"यस्यामलं नृपसदस्सु यशोऽधुनापि
गायन्त्यघघ्नमृषयो दिगिभेन्द्रपट्टम्।
तं नाकपालवसुपालकिरीटजुष्ट-
पादाम्बुजं रघुपतिं शरणं प्रपद्ये॥"
(9/11/21)

Scanned with CamScanner

इसके अतिरिक्त ब्रह्मपुराण और पद्मपुराण में भी ऐसे उल्लेख प्राप्त होते हैं।

इन तथ्यों से स्पष्ट है कि रामायण की रचना महर्षि वेदव्यास के प्रादुर्भूत होने से पूर्व हो चुकी थी।

आधुनिक विद्वानों की दृष्टि में रामायण का कालनिर्धारण→

पाश्चात्य विद्वान→

विद्वान	मत
विंटरनित्स	400 ई०पू० से 300 ई०पू०
मैकडानल	500 ई०पू०
याकोबी	800 ई०पू० से 500 ई०पू०
ए श्लेगल	1100 ई०पू०
जी गोरेसियो	1200 ई०पू०

भारतीय विद्वान

विद्वान	मत
वरदाचार्य	8,67,100 वर्ष पूर्व
कुँवरलाल व्यास शिष्य	7300 ई०पू०
लोकमान्य तिलक	4000 ई०पू०
कामिल बुल्के	600 ई०पू०
जयचन्द्र विद्यालंकार	600 ई०पू०
बलदेव उपाध्याय	500 ई०पू०
वाचस्पति गैरोला	500 ई०पू०
चन्द्रशेखर पाण्डेय	500 ई०पू०

वैज्ञानिक मत→ जनवरी, 1994 ई० में बिड़ला शोध संस्थान के वैज्ञानिकों ने अनेक वैज्ञानिक साक्ष्यों के आधार पर यह सुनिश्चित किया है कि रामायण की रचना 7300 ई०पू० में हुई होगी।

Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi
Scanned with CamScanner

अन्य वैज्ञानिकों ने भी रामायण के कालनिर्धारण का प्रयत्न किया है। वाल्मीकि रामायण में वर्णित ग्रह-नक्षत्रों को आधार बनाकर किए गए अनुसंधान के आधार इन वैज्ञानिकों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि राम का जन्म ~~7~~ 4 दिसम्बर 7323 ई॰पू॰ को हुआ था। ~~उन्होंने यह भी गणना निकाली है कि~~ ~~[illegible]~~

<u>निष्कर्ष</u> - यह तो स्पष्ट है कि रामायण के कालनिर्धारण को लेकर मतैक्य नहीं है। जहाँ आधुनिक विद्वान रामायण की रचना के काल को 400 ई॰पू॰ तक खींचने का प्रयास करते हैं, वहीं दूसरी ओर भारतीय परम्पराओं एवं मान्यताओं के अनुसार इसकी रचना आज से 8 लाख 80 हजार वर्ष पूर्व हुई थी। वैज्ञानिकों ने वाल्मीकि रामायण में वर्णित ग्रह नक्षत्रों की स्थिति के आधार पर रामायण के समय को 7300 ई॰पू॰ के लगभग निश्चित किया है। उनका यह भी मत है कि जिस प्रकार ग्रह-स्थितियों का वर्णन किया गया है वह परस्पर एक दूसरे से सम्बद्ध और सटीक है। उनका काल्पनिक आधार नहीं हो सकता। हालांकि उन वैज्ञानिकों ने यह भी कहा है, संभव है लाखों वर्ष पूर्व भी वही ग्रह-स्थिति रही हो जो रामायण में वर्णित है, परन्तु यह तय है कि 7300 ई॰पू॰ के पश्चात ग्रहों की वैसी स्थिति आज तक नहीं हुई।

अतः हमें यह मानने में संदेह नहीं होना ~~सकना~~ चाहिए कि रामायण 7300 ई॰पू॰ या ~~[illegible]~~ उससे पूर्व की रचना है।

इस बात में भी काफी दम है कि श्रीराम और वाल्मीकि समकालीन थे। रामायण के अनेक वर्णन इसकी पुष्टि करते हैं। इसके अतिरिक्त हमारे प्राचीन महाकवियों जिसमें भास, कालिदास और भवभूति शामिल हैं ने भी राम और वाल्मीकि को समकालीन माना है। वैज्ञानिकों को भी यह बात सच लगती है।

Scanned with CamScanner